नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

बरोडा में शहनाई वादन शिक्षा

श्री जय शिंदे
शोधार्थी, डिपार्टमेंट ऑफ इंस्ट्रुमेंटल म्यूजिक
(सितार वायलिन) द महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
फैकल्टी ऑफ परफार्मिंग आर्ट्स
द महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय

डॉ. विश्वास संत
आसिस्टेंट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ इंस्ट्रुमेंटल म्यूजिक
(सितार वायलिन) द महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
फैकल्टी ऑफ परफार्मिंग आर्ट्स
द महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय

सार-संक्षेप

बरोड़ा शहर को कला-नगरी के रूप में पहचाना जाता हे। बरोड़ा शहर के ज्यादातर नरेश संगीत प्रेमी थे, जिसकी वजह से बरोड़ा में करीब 200 साल से संगीत का विकास होता रहा है। इसकी शुरूआत सयाजीराव गायकवाड़ द्वितीय (1819 से 1874) के समय काल में संगीत प्रचुर मात्रा में उभरकर आया और दरबारों की दिवारो से बाहर निकालकर, आम जनता तक पहुँचाया गया। दरबार संगीत के लिए 'कलावंत खाता' की रचना की गई थी। 'गायन-शाला' की रचना आम जनता को संगीत शिक्षा देने के लिए की गई थी। पंडित वसईकर जो अरनाली गांव, वसई, महाराष्ट्र के निवासी थे। आपकी शहनाई वादन की ख्याति सुनकर आपको बरोड़ा में दरबारी संगीत कलाकार के रूप में राज्याश्रय दिया गया तथा गायन शाला में शहनाई शिक्षक के तौर पर कार्यभार दिया गया। आपने शहनाई वादन शिक्षा के अन्तर्गत गायन शाला में शहनाई को वर्ग-शिक्षा देने का प्रथम प्रयास किया गया। दूसरा, वर्ग खंड याने शहनाई की समूह शिक्षा देने का प्रयास किया जब हर जगह गुरु शिष्य परंपरा चल रही थी। तीसरा, शहनाई वादन में गायकी अंग का प्रयोग किया गया। चतुर्थ, शहनाई शिक्षा के लिए 'सनई वादन पाठमाला' (भाग 1 से 4) जो शहनाई की प्रथम पुस्तक मानी जाती है। पंचम शिक्षा स्तर पूर्ण होने के बाद प्रमाणपत्र भी दिया जाता था। छठा, बरोड़ा में गायन शाला की प्रगति रूप रावपुरा में दूसरी शाखा खोली गई। पंडित वसईकर की 'शहनाई वादन शिक्षा' का यह प्रयोग बरोड़ा शहनाई का सुवर्णयुग कहा जाता है।

मुख्य शब्द :- शहनाई, शहनाई वादन, बरोड़ा संस्थान, शहनाई वादन शिक्षा।

शोध-पत्र

प्रस्तावना

बरोड़ा राज्य में हर कला को प्राधान्य दिया जाता था। 19वीं शाताब्दी में पंडित गणपतराव वसईकरजी को राज्याश्रय दिया गया। दरबारी संगीतकार्य, कलावंत खाता में, शहनाई वादक तथा गायन शाला में शहनाई शिक्षा के लिए वर्ग खंड दिया गया। पहले भी बरोड़ा में शहनाई वादक होते ही थे। लेकिन पंडित वसईकर जी की शहनाई शिक्षा, जो शहनाई वाद्य के लिए 'मिल का पत्थर' साबित हुई। शहनाई वाद्य एक सुंदर शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत आया। जब शहनाई शिक्षा, गुरु शिष्य परंपरा से सिखाई जाती थी तब, पंडित वसईकरजी ने उस समय की आधुनिक शैली तथा व्यवस्था से शहनाई शिक्षा देने का सफल प्रयास किया। प्रथम वर्ग शिक्षा याने शहनाई की सामूहिक शिक्षा का सर्वप्रथम प्रयास कीया गया। शहनाई वादन के लिए 'सनई वादन पाठमाला' भाग 1 से 4 यह पुस्तक जो शहनाई की प्रथम पुस्तक मानी जाती है शहनाई शिक्षा के पूर्ण होने के बाद प्रमाणपत्र दिया जाता था। बरोड़ा में शहनाई का विकास प्रचार-प्रसार और एक सुंदर परंपरा की शुरूआत हुई। इस तरह वर्तमान काल की आधुनिक शिक्षा के समकक्ष यह व्यवस्था पाई गई है। शहनाई वाद्य की ऐसी सुंदर व्यवस्था के लिए, सर सयाजीराव की शहनाई वाद्य के लिए कृपा दृष्टि तथा प्रथम प्रोफेसर की उपाधी प्राप्त उस्ताद मौलाबक्ष घिसे और शहनाई गुरु, पंडित गणपतराव पिराजी वसईकर का शहनाई शिक्षण के प्रति योगदान की वजह से 'बरोड़ा में शहनाई वादन शिक्षा' सफल हुई और आज सबसे ज्यादा शहनाई वादक बरोड़ा में प्राप्त है, जो शहनाई की इस परंपरा को आज भी निभा रहे है।

'बरोड़ा' शहर दो शतक से संगीत कला को प्राधान्य देते रहे है। बरोड़ा रियासत में अपने समय के ज्यादातर नरेशो ने अपना कला प्रेम दर्शाया दर्शाया है। संगीत क्षेत्र की हर कलाओ का विकास करने में बड़ौदा शासकों

का योगदान सराहनीय रहा है। इसी वजह से बरोड़ा को 'कला नगरी' के रूप में पहचानी जाती हे। बरोड़ा शहर ही है जिसने अपनी रियासत में संगीत कला को दरबारों से बाहर निकालकर समाज उपयोगी बनाया। सर सयाजीराव गायकवाड़ भी संगीत कला के शोखीन थें। बड़ौदा दरबार के मनोरंजन कार्य के लिए 'कलावंत खाता' याने मनोरंजन विभाग की स्थापना की गई थी। इस विभाग में गायन-वादन-नृत्यकार, माइम पहलवान, जादूगर आदि सभी कलाकारों की नियुक्ति की जाती थी। सर सयाजीराव ने अपने शासन काल में उस समय का आधुनिक संगीत ध्रुपद खयाल ठुमरी आदि सभी गायन के प्रकारों को भी स्थान दिया था तथा भारतीय वाद्य और पाश्चात्य वाद्यों को भी स्थान दिया था। दिल्ली रामपुर जयपुर पटियाला जैसे रजवाड़ों के नाम से गायन के घराने स्थापित हुए थे उसी तरह बरोड़ा रियासत में गायकवाड़ महाराज की कृपा से बरोड़ा (गुजरात) में संगीत के सुवर्ण युग की शुरुआत हुई थी। बरोड़ा में 19वीं शताब्दी में महाराजा सयाजीराव (दूसरे) महाराजा खंडेराव गायकवाड़, महाराजा मल्हारराव गायकवाड़ और सर सयाजीराव (तीसरे) आदि महाराजाओं के कार्यकाल में कई प्रसिद्ध कलाकारों को 'बरोड़ा' दरबार में आमंत्रित करके राज्याश्रय दिया गया तथा भारत भर से कई नामी कलाकारों को राज्य में बुलाया गया था। जिसमें उस्ताद मौलाबक्ष, उस्ताद अब्दुलकरीम खां, उस्ताद फैयाज खां, पंडित गणपतराव वसईकर तथा पंडित शंकरराव गायकवाड़ जैसे प्रथम श्रेणी के कलाकारों की सूची के उल्लेखनीय नाम है।

बरोड़ा में सन् 1881 में सर सयाजीराव गायकवाड़ (तीसरे) के समय में, कलावंत खाता, गायन शाला, और नौबतखाना जैसे संगीत विभाग को समृद्ध करने का जीम्मा उठाया। इस कार्य के लिए महाराजा को सन् 1881 में उस्ताद मौलबक्ष को आमंत्रित किया और संगीत विभाग के सर्वोच्च पद पर नियुक्त किया गया। (Bakhle 20)

कलावंत खाता के सभी कलाकारो का मुख्य काम दरबार में संगीत की सेवा करना और बड़ौदा शहर के नियुक्त मंदिरों में, बड़ौदा के उत्सवों नियुक्त स्थल पर बेंड स्टैंड, न्याय मंदिर, मांडवी, कीर्तिमंदिर, आदि मुख्य जगहों पर अपना संगीत सुबह-शाम प्रदर्शित करना रहता था जो कलावंत खाता के मुख्य कार्यों में आता था।

शहनाई वादन–बरोड़ा रियासत में पहले भी हुवा करता था लेकिन सर सयाजीराव ने, महाराष्ट्र के वसई गाँव के निवासी पंडित गणपतराव पीराजी वसईकर जी का शहनाई वादन से प्रभावित होकर, पंडित जी को राज्याश्रय, कलाज्योति अवॉर्ड, राज्य का पदक, धन आदि से सन्मानित किया और आपको कलावंत खाता में शहनाई वादक के तौर पर स्थान दिया। शहनाई जैसे मंगल वाद्य को, भारतीय संगीत परंपरा में उच्चश्रेणी का स्थान, बड़ौदा राज्य में ही मिला ऐसा माना जाता है। (निगम) श्रीमंत सयाजीराव ने धार्मिक कार्यों पर बजाए जानेवाले इस वाद्य को एक स्वतंत्र वाद्य की पहचान दिलाई। सयाजीराव की सोच तथा बड़ौदा में शहनाई वाद्य का विकास शिक्षा तथा परंपरा में पंडित गणपतराव वसईकर का बड़ा योगदान है। सन् 1916 में आयोजित प्रथम 'अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन' की शुरूआत पंडित वसईकर के शहनाई वादन से हुई। यह शहनाई और पंडित वसईकर के लिये गौरवपूर्ण क्षण मानता है।

'गायन शाला' बरोड़ा नरेश मल्हारराव गायकवाड़ ने उस्ताद मौलाबक्ष को पुनः बड़ौदा में आमंत्रित किया एवं दरबारी संगीत कला कार्य में सर्वोच्च स्थान पर नियुक्त किया। (Bakhle 34) कुछ वर्षों के बाद 1 फरवरी 1886 के दिन 'गायन शाला' की स्थापना की गई। इस गायन शाला को सभी प्रकार की सुविधाएँ राज्य की और से प्रदान की गई थीं।

गायन शाला की स्थापना के बाद कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। उस समय संगीत शिक्षा का संचालन, केवल दो या तीन शिष्यों को ही दिया जाता था। आम लोगो को या संगीत शौकीनों के लिए कोई पर्याय नहीं रहता था। (Archives) गायन शाला में संगीत शिक्षा का यह प्रथम प्रयास माना जा सकता है। गायकवाड़ नरेश ने संगीत को, दरबारी कार्य से बाहर निकालकर जन मानस तक पहुँचाना चाहते थे।

बरोड़ा में संगीत संस्कार का जन प्रसार करने हेतु, 5वीं कक्षा तथा उससे ऊपरी कक्षा के विद्यार्थियों को गायन शाला में प्रवेश दिया जाता था। गायन शाला का समय 6 से 8 शाम का रखा गया। आकर्षण बढ़ाने हेतु शिक्षा को मुफ्त किया गया। (खान 6) 12 लड़कों की कक्षा में 6 विद्यार्थियों को छात्रवृति देना तय किया गया था। लेकिन 70 विद्यार्थियों का आवेदन आया जिसमें 30 विद्यार्थी को छात्रवृति सह प्रवेश दिया गया था। (Archives) सन् 1888 में 100 से अधिक विद्यार्थी को प्रवेश दिया गया था। गायन शाला के लिए 1200 रुपया वार्षिक खर्च मंजूर भी किया गया था। (Archives) इस गायन शाला की खास बात यह थी कि गायन के साथ वाद्य की भी शिक्षा दी जाती थी।

बरोड़ा शहर में गायन शाला लोकप्रिय हो चुकी थी। रावपुरा में उस्ताद मौलाबक्ष तथा डांडिया बाजार में फैज महम्मद ऐसी दो गायन शाला की स्थापना की गई थी। (Archives) बरोड़ा के बाहर 1889 में पाटण शहर और फिर नवसारी शहर में गायन शाला बनाई गई थी। (Bakhle 43) सन् 1888 में सितार फि डेल हारमोनियम, जलतरंग, तथा तबला जैसे वाद्यों का प्रशिक्षण दिया जाने लगा था। (Bakhle 44)

विविध वाद्यों की तकनीकी पक्ष एवं उसकी शिक्षा विधि के लिये पुस्तकों का प्रकाशन भी किया गया था। सितार शिक्षक, ताल पद्धति इनायत हारमोनियम शिक्षक, इनायत खा फि डेल, सनई वादन पाठमाला (1 से 4) इत्यादि। पाठ्य पुस्तक प्रकाशन में मराठी गीत, गुजराती गरबा, उर्दू की गजल तथा अंग्रेजी गीत रचना इत्यादि भाषा किय रचना को पाठ्य पुस्तको में संम्मिलित किया गया था। (Bakhle 43)

सन् 1908 से गायन शाला में पाश्चात्य वाद्यों में पियानो, कोरोनेट, टेनर इत्यादि सिखाया जाता था और क्रियात्मक एवं शास्त्र की परीक्षा भी आयोजित की जाती थी। शहनाई सारंगी सितार दिलरुबा ताऊस पखावज जैसे दुर्लभ वाद्यों को भी सिखाया जाता था। यह प्रयोग काफी सफल रहा।(माँ संगीत शिक्षण 6) बरोड़ा में उस्ताद मौलाबक्ष द्वारा स्थापित गायनशाला पश्चिम भारत की एक मात्र संस्था थी जिसमें, गायन के

साथ-साथ वादन शिक्षा को भी उतना ही महत्त्व दिया जाता था।

–शहनाई भारत का प्राचीन वाद्य माना जाता है। भारतीय सनातन परंपरा में सभी धार्मिक कार्यों की शुरूआत शहनाई वाद्य के प्रयोग से होती है। भारतीय परंपरा से संम्मिलित यह वाद्य प्राचीन काल से आधुनिक युग में भी शहनाई वाद्य कलाकारों को योग्य स्थान नहीं दिया जाता है। शैक्षणिक क्षेत्र में भी शहनाई विषय शिक्षण, किसी संस्था, महाविद्यालय में आज भी सिखाया नहीं जाता। इस समय काल में पंडित गणपतराव वसईकर जी को बरोड़ा में शहनाई वादन के लिए बुलाया गया था। पंडित जी की शहनाई से खुश होकर आपको राज्याश्रय दिया गया। आपको ''कलावंत खाता'' में नियुक्त किया गया और 1914 में गायन शाला में शहनाई का वर्गखंड दिया गया। शहनाई की वर्ग शिक्षा देने का यह प्रथम प्रयास किया गया था। वर्ग शिक्षा याने विषय गत, योग्य सोच और योग्य वर्ग खंड अनुरूप शिक्षण देने का, शहनाई जैसे कलिष्ठ वाद्य के लिए यह प्रथम प्रयास था।

दूसरा–वर्ग खंड याने शहनाई की सामूहिक शिक्षा देने का प्रथम प्रयास किया गया। जब गुरु शिष्य परंपरा अनुसार शहनाई का शिक्षण दिया जाता था उस समय वर्ग खंड शिक्षा या शहनाई की सामूहिक शिक्षा का बड़ौदा में, प्रथम प्रयास 'गायन शाला' में किया गया था।

तीसरा–शहनाई वादन में गायकी अंग का प्रयोग, पंडित गणपतराव वसईकर ने शास्त्रीय गायन की शिक्षा के साथ शहनाई और तबले की शिक्षा, आपने बचपन से ही प्राप्त की थी। शहनाई में गायकी अंग का प्रयोग आप आम तौर पर करते रहते थे। उस समय शहनाई लोक वाद्य या मंगल वाद्य के तौर पर बजाया जाता था तब पंडित जी गायकी अंग के प्रयोग से शहनाई वाद्य बजाते थे। शहनाई वाद्य में गायकी अंग यह प्रयोग प्रथम था ऐसा माना जाता है। गायकी अंग की यह बात पंडित जी की ''सनई वादन पाठमाला'' पुस्तक में दी गई सारी बंदिशों से भी ज्ञात होता है। आप गायकी अंग की बंदिशों के प्रयोग से शहनाई वादन की शिक्षा देते थे।

चतुर्थ–'सनई वादन पाठमाला' यह पुस्तक का प्रथम भाग सन् 1918 में बरोड़ा राज्य से प्रकाशित हुआ। सन् 1918 से 1922 तक इस पुस्तक के चार भागो का प्रकाशन किया गया था। यह पुस्तक की गिनी चुनी प्रतियाँ पारंपरिक वादन कार के पास बची है। रागों की बंदिशें सिखाने के लिए इस पुस्तक का प्रयोग वर्ग खंड में दिया जाता था। आज भी कई शहनाई वादक इन बंदिशों को बजाकर आज भी वादन करते हैं।

पाँचवा–गायन शाला में 5 वर्ष का शिक्षण दिया जाता था। तथा 6 से 8 बजे शाम के समय में शहनाई की वर्ग शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा के 5 वर्ष पूर्ण करने के बाद छत्रों को शहनाई शिक्षा का प्रमाणपत्र दिया जाता था। यह आज की आधुनिक शिक्षा की तरह की व्यवस्था थी।

छठा–उस्ताद मौलबक्ष की रावपूरा में गायन शाला चलाई गई जो काफी सफल रही। उसके कुछ वर्षों बाद डांडिया बाजार में दूसरी शाखा बनाई गई जो ज्यादा सफल नहीं रह पाई। बाद में पाटण नवसारी डभोई आदि शहरों में शाखाए बनाई गई। इस तरह संगीत कला और संगीत कला के प्रकारों को समाज तक पहुँचाया जाता था।

सर सयाजीराव गायकवाड़, उस्ताद मौलाबक्ष, पंडित गणपतराव वसईकर, तथा पंडित भातखंडे जैसे महान संगीतज्ञ दूरंदेशी व्यक्तियों ने शहनाई जैसे कलिष्ठ साज को शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में स्थान देकर उस साज की शिक्षा व्यवस्था में अपना योगदान देकर उस समय की सबसे आधुनिक सोच से शिक्षा देकर बरोड़ा में शहनाई वादन शिक्षा का स्वर्णिम इतिहास की रचना की थी।

इस शहनाई वादन शिक्षा का परिणाम यह आया कि, पंडित वसईकर की शहनाई शिक्षा तथा शहनाई वादक और परंपरा का विकास होता रहा। अन्य राज्यो की तुलना में गुजरात के बरोड़ा शहर में सबसे ज्यादा शहनाई वादक दिखाई देते हे। आज भी १० परिवार ऐसे ही जो पंडित गणपतराव वसईकर की शहनाई परंपरा को आगे बढ़ाते जा रहे है।

निष्कर्ष :- शहनाई भारत का प्रचलित वाद्य है फिर भी आधुनिक भारत में किसी संस्थान या महाविद्यालयों में शहनाई विषय को नहीं सिखाया जाता। बड़ौदा में सयाजीराव गायकवाड़ की सोच और उस्ताद मौलाबक्ष की संस्था व्यवस्था तथा पंडित गणपतराव वसईकर की शहनाई वादन शिक्षा बरोड़ा में शहनाई का सुवर्ण इतिहास बना गई। जो आज की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के समकक्ष थी। ऐसी शहनाई शिक्षा का गौरव शाली इतिहास को संगीत जगत तक पहुँचाया जाये यही सभी संगीत रसिकों से प्रार्थना है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Bakhle janaki, Two Man and Music, nationalism in the making of a classical tradition Oxford University press,New York
2. Archives, List offilesin the records of the huzur political office 1886-87 to 1888-1889 and 1901. 11-13.
3. खान, मौलबक्ष धीसे (1888) संगीत अनुभव, बड़ौदा
4. Archives, List offilesin the records of the huzur political office 1886-87 to 1888-1889 and 1901.
5. Annual Report. (1893). Annual report on the Administration of Baroda state of, H.M.Library baroda.
6. माँ संगीत शिक्षण (गुजराती) बड़ोदरा राज्य (1941-1942) प्रकाशन पत्रिका अंक 19. श्री सयाजी साहित्य माला, हंसा महेता पुस्तकालय, दि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बरोड़ा
7. 'सनई वादन पाठमाला' पुस्तक, लेखक पंडित वसईकर

संदर्भ सूची

1. Bakhle janaki, Two Man and Music, nationalism in the making of a classical tradition Oxford University press,New York 25 page 20. (RF 18 vs c1)
2. निगम प्रीति, शोध-प्रबंध 1998 पू 144 से 149 (RF ww)

3. Bakhle janaki 2005 Two Man and Music, nationalism in the making of a classical tradition Oxford University press, on Demand, page 39 (RF18 vs c2 p93)
4. Archives, List offilesin the records of the huzur political office 1886-87 to 1888-1889 and 1901. अभिलेखागार पु. 11-13. 11-12-13. (RF 28 vs c2 p 102)
5. खान, मौलबक्ष धीसे (1888) संगीत अनुभव, बड़ौदा पृ. 6 (RF 29)
6. Archives, List of files in the records of the huzur political office 1886-87 to 1888-1889 and 1901. (RF-28)
7. Archives, Annual Report. (1893). Annual report on the Administration of Baroda state of, H.M.Library baroda. pp. 123-24.(RF 31)
8. Archives, Annual Report. (1893). Annual report on the Administration of Baroda state of, H.M.Library baroda.pp. 123-24. (RF 31)
9. Bakhle Janaki, Two Man and Music, nationalism in the making of a classical tradition Oxford University press,New York 25 page 43. (RF 18 vs c1)
10. वही, पृ. 43
11. वही, पृ. 43
12. Bakhle Janaki, Two Man and Music, nationalism in the making of a classical tradition Oxford University press,New York 25 page 44. (RF 18 vs c1)
13. बड़ोदरा राज्य माँ संगीत शिक्षण (गुजराती) (1941-1942)
प्रकाशन पत्रिका अंक 19. श्री सयाजी साहित्य माला, हंसा महेता पुस्तकालय, दि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बरोड़ा. पृ. 6